हिंदी

सुलभभारती

छठी कक्षा

भारत का संविधान

भाग 4 क

मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य– भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करें;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखें;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे ।

हिंदी सुलभभारती अध्ययन निष्पत्ति : छठी कक्षा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया	अध्ययन निष्पत्ति
सभी विद्यार्थियों (भिन्न रूप से सक्षम विद्यार्थियों सहित) को व्यक्तिगत, सामूहिक रूप से कार्य करने के अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, ताकि उन्हें – • हिंदी भाषा में बातचीत तथा चर्चा करने के अवसर हों । • प्रयोग की जाने वाली भाषा की बारीकियों पर चर्चा के अवसर हों । • सक्रिय और जागरूक बनाने वाली रचनाएँ, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, फिल्म और ऑडियो-वीडियो सामग्री को देखने, सुनने, पढ़ने, लिखने और चर्चा करने के अवसर उपलब्ध हों । • समूह में कार्य करने और एक-दूसरे के कार्यों पर चर्चा करने, राय लेने-देने, प्रश्न करने की स्वतंत्रता हों । • हिंदी के साथ-साथ अपनी भाषा की सामग्री पढ़ने-लिखने की सुविधा (ब्रेल/ सांकेतिक रूप में भी) और उन पर बातचीत की आजादी हों । • अपने परिवेश, समय और समाज से संबंधित रचनाओं को पढ़ने और उन पर चर्चा करने के अवसर हों । • हिंदी भाषा गढ़ते हुए लिखने संबंधी गतिविधियाँ आयोजित हों, जैसे – शब्द खेल । • हिंदी भाषा में संदर्भ के अनुसार भाषा विश्लेषण (व्याकरण, वाक्य संरचना, विराम चिह्न आदि) करने के अवसर हों । • कल्पनाशीलता और सृजनशीलता को विकसित करने वाली गतिविधियों, जैसे – अभिनय (भूमिका अभिनय), कविता, पाठ, सृजनात्मक लेखन, विभिन्न स्थितियों में संवाद आदि के आयोजन हों और उनकी तैयारी से संबंधित स्क्रिप्ट लेखन और वृत्तांत लेखन के अवसर हों । • साहित्य और साहित्यिक तत्त्वों की समझ बढ़ाने के अवसर हों । • शब्दकोश का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहन एवं सुलभ परिवेश हो । • सांस्कृतिक महत्त्व के अवसरों पर अवसरानुकूल लोकगीतों का संग्रह करने, उनकी गीतमय प्रस्तुति देने के अवसर हों ।	**विद्यार्थी –** 06.15.01 विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, सामाजिक संस्थाओं, परिसर एवं सामाजिक घटकों के संबंध में जानकारी तथा अनुभव को प्राप्त करने हेतु वाचन करते हैं तथा सांकेतिक चिह्नों का अपने ढंग से प्रयोग कर उसे दैनिक जीवन से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं । 06.15.02 गद्य, पद्य तथा अन्य पठित/अपठित सामग्री के आशय का आकलन करते हुए तथा गतिविधियों/घटनाओं पर बेझिझक बात करते हुए प्रश्न निर्मिति कर प्रश्नों के सटीक उत्तर अपने शब्दों में लिखते हैं । 06.15.03 किसी देखी-सुनी रचनाओं, घटनाओं, प्रसंगों, मुख्य समाचार एवं प्रासंगिक कथाओं के प्रत्येक प्रसंग को उचित क्रम देते हुए अपने शब्दों में प्रस्तुत करते हैं, उनसे संबंधित संवादों में रुचि लेते हैं तथा वाचन करते हैं। 06.15.04 संचार माध्यमों के कार्यक्रमों और विज्ञापनों को रुचिपूर्वक देखते, सुनते तथा अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं । 06.15.05 प्रासंगिक कथाएँ/विभिन्न अवसरों, संदर्भों, भाषणों, बालसभा की चर्चाओं, समारोह के वर्णनों, जानकारियों आदि को एकाग्रता से समझते हुए सुनते हैं, सुनाते हैं तथा अपने ढंग से बताते हैं । 06.15.06 हिंदीतर विविध विषयों के उपक्रमों एवं प्रकल्पों पर सहपाठियों से चर्चा करते हुए विस्तृत जानकारी देते हैं । 06.15.07 भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए सार्थक वाक्य बताते हैं तथा उचित लय-ताल, आरोह-अवरोह, हावभाव के साथ वाचन करते हैं । 06.15.08 अपनी चर्चा में स्वर व्यंजन, विशेष वर्ण, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर से युक्त शब्दों एवं वाक्यों के मानक उच्चारण करते हुए तथा गद्य एवं पद्य परिच्छेदों में आए शब्दों को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हुए अपने शब्द भंडार में वृद्धि करते हैं । 06.15.09 हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं, देशभक्तिपरक गीत, दोहे, चुटकुले आदि रुचि लेते हुए ध्यानपूर्वक सुनते हैं, आनंदपूर्वक दोहराते तथा पढ़ते हैं । 06.15.10 दैनिक लेखन, भाषण-संभाषण में उपयोग करने हेतु अब तक पढ़े हुए नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं तथा नए शब्दों का लघुशब्दकोश लिखित रूप में तैयार करते हैं । 06.15.11 सुनी, पढ़ी सामग्री तथा दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभव से संबंधित उचित मुद्दों को अधोरेखांकित करते हुए उनका संकलन करते हुए चर्चा करते हैं । 06.15.12 विविध विषयों की गद्य-पद्य, कहानी, निबंध, घरेलू पत्र से संबंधित संवादों का रुचिपूर्वक वाचन करते है तथा उनका आकलन करते हुए एकाग्रता से उपयुक्त विराम चिह्नों का उपयोग करते हुए सुपाठ्य- सुडौल, अनुलेखन, सुलेखन, शुद्ध लेखन करते हैं । 06.15.13 अलग-अलग कलाओं, जीवनोपयोगी वस्तुओं की प्रदर्शनी एवं यात्रा वर्णन समझते हुए वाचन करते हैं तथा उनको अपने ढंग से लिखते हैं ।

स्वीकृति क्रमांक : मराशैसंप्रप/अविवि/शिप्र २०१५-१६/१६७३ दिनांक ६/४/२०१६

हिंदी
सुलभभारती
छठी कक्षा

मेरा नाम ____________________ है ।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

KAU5TN

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी ।

प्रथमावृत्ति : २०१६
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण : २०२१

© महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैदय-अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील-सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला-सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी-सदस्य
श्री संतोष धोत्रे-सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी-सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे-सदस्य
डॉ.अलका पोतदार-सदस्य-सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

डॉ.वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती माया कोथळीकर
डॉ.आशा वी. मिश्रा
श्री प्रकाश बोकील
श्री रामदास काटे
श्री रामहित यादव
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ.शैला चव्हाण
श्रीमती शारदा बियानी
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुसकुटे
श्रीमती रत्ना चौधरी

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक,
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ,
प्रभादेवी, मुंबई-२५

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : लीना माणकीकर
चित्रांकन : राजेश लवळेकर, महेश किरडवकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री संदीप आजगांवकर, निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2021-22/
मुद्रक : M/s

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन – अधिनायक जय हे
भारत – भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत – भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

बच्चों का 'निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षाधिकार अधिनियम २००९ और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप-२००५' को दृष्टिगत रखते हुए राज्य की 'प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या-२०१२' तैयार की गई । इस पाठ्यचर्या पर आधारित हिंदी द्‌वितीय भाषा (संपूर्ण) 'सुलभभारती' की पाठ्यपुस्तक, मंडळ प्रकाशित कर रहा है । छठी कक्षा की यह पुस्तक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें विशेष आनंद हो रहा है ।

हिंदीतर विद्‌यालयों में छठी कक्षा हिंदी शिक्षा का द्‌वितीय सोपान है । छठी कक्षा के विद्‌यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया सहज-सरल बनाने के लिए इस बात का ध्यान रखा गया है कि यह पुस्तक चित्ताकर्षक, चित्रमय, कृतिप्रधान और बालस्नेही हो । प्राथमिक शिक्षा के विभिन्न चरणों में विद्‌यार्थी निश्चित रूप से किन क्षमताओं को प्राप्त करे; यह अध्ययन-अध्यापन करते समय स्पष्ट होना चाहिए । इसके लिए प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रारंभ में हिंदी भाषा विषय की अपेक्षित अध्ययन निष्पत्ति का पृष्ठ दिया गया है । इन का अनुसरण करते हुए पाठ्यपुस्तक में समाविष्ट पाठ्यांशों की नाविन्यपूर्ण प्रस्तुति की गई है ।

विद्‌यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखकर हिंदी भाषा शिक्षा मनोरंजक एवं आनंददायी बनाने के लिए योग्य बालगीत, कविता, चित्रकथा और रंगीन चित्रों का समावेश किया गया है । भाषाई दृष्टि से पाठ्यपुस्तक और अन्य विषयों के बीच सहसंबंध स्थापित करने का प्रयत्न किया गया है । इन घटकों के अध्यापन के समय विद्‌यार्थियों के लिए अध्ययन-अनुभव के नियोजन में शालाबाह्य जगत एवं दैनिक व्यवहार से जुड़ी बातों को जोड़ने का प्रयास किया गया है । व्याकरण को भाषा अध्ययन के रूप में दिया गया है ।

पाठ्यपुस्तक को सहजता से कठिन की ओर तथा ज्ञात से अज्ञात की ओर अत्यंत सरलता पूर्वक ले जाने का पूर्ण प्रयास किया गया है । शिक्षक एवं अभिभावकों के मार्गदर्शन के लिए सूचनाएँ 'दो शब्द' तथा प्रत्येक पृष्ठ पर 'अध्यापन संकेत' के अंतर्गत दी गई हैं । यह अपेक्षा की गई है कि शिक्षक तथा अभिभावक इन सूचनाओं के अनुरूप विद्‌यार्थियों से कृतियाँ करवाकर उन्हें योग्य शैली में अग्रसर होने तथा शिक्षा ग्रहण करने में सहायक सिद्‌ध होंगे । 'दो शब्द' तथा 'अध्यापन संकेत' की ये सूचनाएँ अध्ययन-अध्यापन की प्रकिया में निश्चित उपयोगी होंगी ।

हिंदी भाषा समिति, भाषा अभ्यासगट और चित्रकारों के निष्ठापूर्ण परिश्रम से यह पुस्तक तैयार की गई है। पुस्तक को दोषरहित एवं स्तरीय बनाने के लिए राज्य के विविध भागों से आमंत्रित शिक्षकों, विशेषज्ञों द्‌वारा पुस्तक का समीक्षण कराया गया है । समीक्षकों की सूचना और अभिप्रायों को दृष्टि में रखकर हिंदी भाषा समिति ने पुस्तक को अंतिम रूप दिया है । 'मंडळ' हिंदी भाषा समिति, अभ्यासगट, समीक्षकों, चित्रकारों के प्रति हृदय से आभारी है । आशा है कि विद्‌यार्थी, शिक्षक, अभिभावक सभी इस पुस्तक का स्वागत करेंगे ।

(चं. रा. बोरकर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ पुणे-०४

पुणे
दिनांक :- ८ अप्रैल २०१६
भारतीय सौर : १९ चैत्र १९३८

* अनुक्रमणिका *

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
*	मेला	१
१.	सैर	२,३
२.	बसंती हवा	४-६
३.	उपहार	७-१०
४.	जोकर	११,१२
५.	(अ)आओ, आयु बताना सीखो	१३
	(ब) महाराष्ट्र की बेटी	
६.	मेरा अहोभाग्य	१४-१७
७.	नदी कंधे पर	१८
८.	जन्मदिन	१९-२२
९.	सोई मेरी छौना रे !	२३-२५
*	स्वयं अध्ययन-१	२६
*	पुनरावर्तन -१	२७

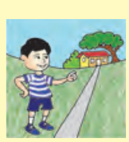

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	पृष्ठ क्र.
१.	उपयोग हमारे	२८,२९
२.	तूफानों से क्या डरना	३०-३२
३.	कठपुतली	३३-३६
४.	सोना और लोहा	३७-३९
५.	(अ) क्या तुम जानते हो ?	४०
	(ब) पहेलियाँ	
६.	स्वास्थ्य संपदा	४१-४४
७.	कागज की थैली	४५
८.	टीटू और चिंकी	४६-४९
९.	वह देश कौन-सा है ?	५०-५२
*	स्वयं अध्ययन-२	५३
*	पुनरावर्तन - २	५४

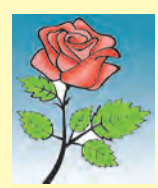

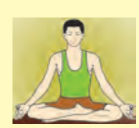

● पहचानो और बताओ :

❋ मेला

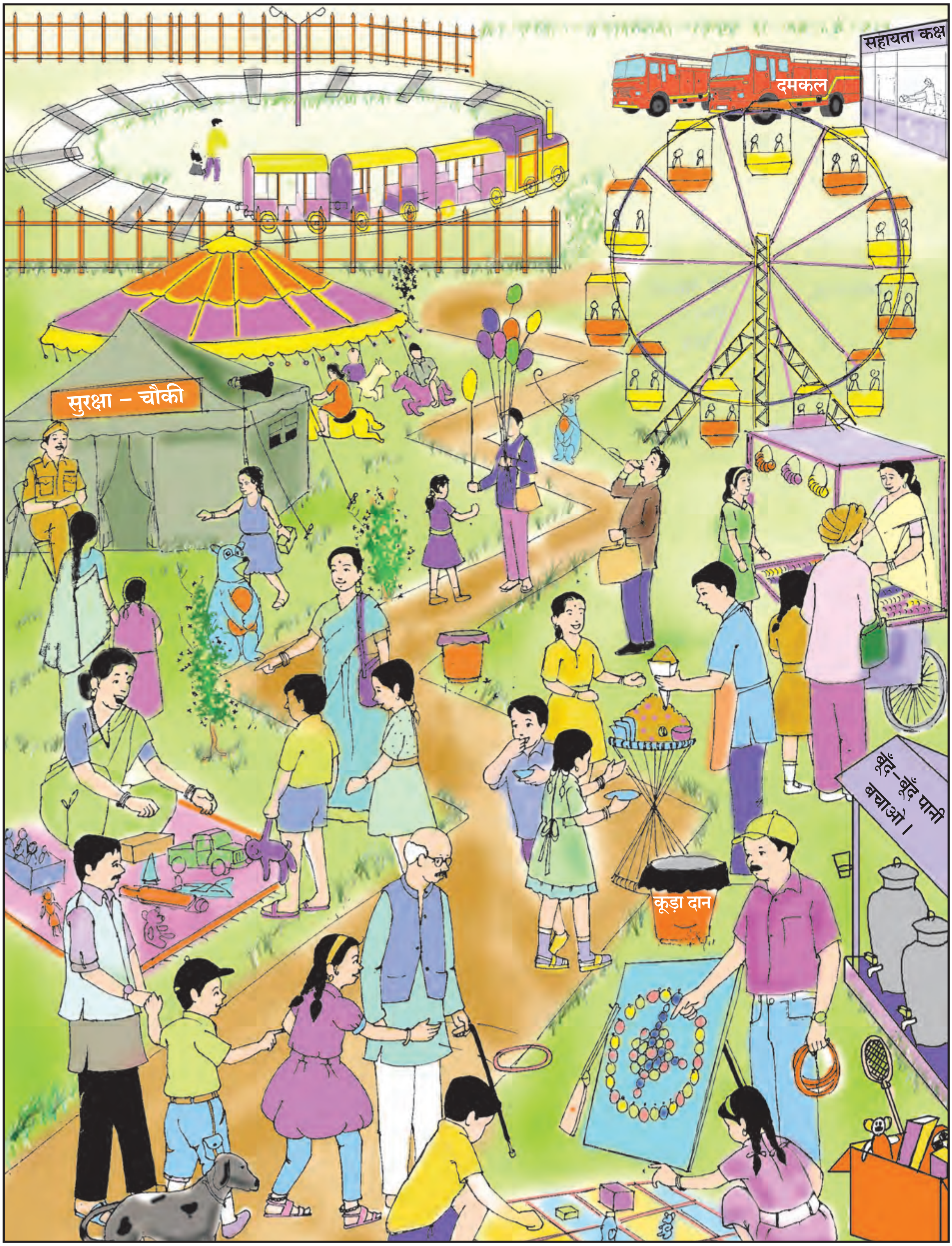

❑ **अध्यापन संकेत :** विद्यार्थियों से चित्रों का निरीक्षण कराकर प्रश्न पूछें । उनसे मेले का पूर्वानुभव कहलवाएँ तथा दिए गए वाक्य को समझाएँ । परिचित फेरीवाला, सब्जीवाली आदि व्यवसायियों के सुख-दुख को समझकर उनसे बातचीत करने के लिए प्रेरित करें ।